BA-3, Paper-5
Topic - लोकप्रशासन और अर्थशास्त्र में संबंध
Date - 18.07.2020
Seema Kumari, Asst. Prof (Pol.Sc.), RMC, VKSU

लोक प्रशासन एवं अर्थशास्त्र विषय में संबंध :-

अर्थशास्त्र सामाजिक व्यवहार के उन पहलुओं और उन संस्थाओं से संबंधित विज्ञान है जो उत्पादन तथा मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि में पदार्थों तथा सेवाओं के वितरण हेतु सीमित संसाधनों के उपयोग में अंतर्ग्रस्त है। एल. राबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र की परिभाषा ऐसे विज्ञान के रूप में की है 'जो मानव व्यवहार का अध्ययन लक्ष्यों तथा वैकल्पिक उपयोग वाले सीमित साधनों के संबंधों के रूप में करता है।'

18वी सदी तथा 19वीं सदी में काफी समय तक प्रशासन के मुख्य उद्देश्य व्यवस्था बनाए रखना तथा राजस्व वसूलना था। औद्योगिक क्रांति से राज्य की संकल्पना में आमूल परिवर्तन हुआ। यह परिवर्तन जनसमुदाय विशेषकर मजदूर वर्ग की आवश्यकताओं के प्रति पहले की अपेक्षा अधिक उत्तरदायी होने की विवशता के कारण हुआ। काम के घंटे और न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करने वाले औद्योगिक नियमों से प्रशासन पर बहुत दबाव पड़ा। समाजवादी समाज की स्थापना जैसे लक्ष्यों से विकास में प्रशासन की भूमिका का भी विस्तार हुआ। अभी तक जिन उद्योगों का प्रबंध निजी निजी क्षेत्र के हाथ में था वे उद्योग सरकार के सीधे प्रशासन के अधीन आ गए। तेजी से बढ़ता हुआ सरकारी क्षेत्र अर्थशास्त्र और लोक प्रशासन के बीच संबंध स्पष्ट करता है

सरकारी क्षेत्र की बढ़ती इस भूमिका से तथा अर्थ-व्यवस्था के नियमन में सरकार के सीधे हस्तक्षेप से लोक प्र पर काफी भार पड़ा है

Scanned with CamScanner

समाजवादी समाज को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए योजनाओं का माध्यम अपनाया गया है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रशासकों का यह काम है कि वे योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के तरीकों का चयन करें। प्रशासकों को रेलवे और बीमा कंपनियों के प्रबंध, बैंकिंग, कृषि से संबंधित समस्याओं का निपटारा आदि है। इसलिए प्रशासकों को देश की आर्थिक समस्याओं को समझना आवश्यक है। प्राचीन गौरवग्रंथ 'अर्थशास्त्र' न केवल प्रशासन की कला पर एक गौरवग्रंथ है बल्कि अर्थशास्त्र का भी संदर्भ ग्रंथ है। कई अन्य मामलों में यह ग्रंथ लोक प्रशासन और अर्थशास्त्र के निकट संबंधों को इंगित करता है।

Scanned with CamScanner